Roll No. ....

Total No. of Pages : 4+2

Total No. of Questions : 6

m 58314-15

पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड

विषय कोड : 615

आयुर्विज्ञानम्

चतुर्थ प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

निर्देश : सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

1. निम्नांकित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए : 10×1=10

(*i*) निम्न में से त्रिविध औषध के अन्तर्गत **नहीं** आता ?

(अ) दैवव्यापाश्रय

(ब) युक्तिव्यापाश्रय

(स) सत्वावजय

(द) भूतादिविद्या

(*ii*) चरक संहिता में राजयक्ष्मा के तीन रूप वर्णित किये गये हैं, निम्न को छोड़कर :

(अ) त्रिरूप

(ब) षडरूप

(स) दशरूप

(द) एकादशरूप

(*iii*) रसों की संख्या के आधार पर द्रव्यों के कितने भेद बताए गये हैं ?

(अ) 61

(ब) 62

(स) 63

(द) 64

(*iv*) निम्न में से कौन त्रिस्रैषणा के अन्तर्गत **नहीं** आता ?

(अ) प्राणैषणा

(ब) धनैषणा

(स) कामैषणा

(द) परलोकैषणा

(*v*) षट्क्रियाकाल की द्वितीय अवस्था है :

(अ) संचय

(ब) प्रकोप

(स) प्रसर

(द) भेद

(*vi*) चिकित्सा के चतुष्पाद में कौन सम्मिलित **नहीं** है ?

(अ) चिकित्सक

(ब) रोगी

(स) रोगी के परिजन

(द) औषध

(*vii*) चरक संहिता में वर्णित सदातुर में कौन सम्मिलित **नहीं** है ?

(अ) श्रोत्रिय

(ब) राजसेवक

(स) राजा

(द) वैश्य

(*viii*) आयुर्वेद मत से शोष का कौनसा कारण **नहीं** है ?

(अ) साहस

(ब) वेगधारण

(स) विषम अशन

(द) अतिशयन

(*ix*) आयुर्वेद के मतानुसार रस का प्रमुख स्थान है :

(अ) हृदय

(ब) आमाशय

(स) यकृत

(द) प्लीहा

(*x*) निम्न में से कौनसा पंचरसात्मक द्रव्य **नहीं** है ?

(अ) हरीतकी

(ब) रसोन

(स) आमलकी

(द) प्याज

2. रिक्त स्थान भरिये : 10×1=10

(*i*) द्रव्यों के स्वाभाविक गुणों से भिन्न अन्य गुणों का अन्तर्धान करना .... कहलाता है।

(*ii*) ऋतुसात्म्य की अपेक्षा करने वाला काल .... कहलाता है।

(*iii*) दोषों के .... प्रकार के प्रसर (क्रियाकाल के अनुसार) बताये गये हैं।

(*iv*) आहार उपयोग नियम को .... कहते हैं।

(*v*) अकस्मात ही किसी कार्य का उत्पन्न होना .... कहलाता है।

(*vi*) आत्मा, इन्द्रिय, इन्द्रियार्थ व मन के सन्निकर्ष से होने वाला ज्ञान .... कहलाता है।

(*vii*) प्राणों का नाश करने वाला वैद्य .... कहलाता है।

(*viii*) चरक संहिता .... विषयक प्रधान ग्रंथ है।

(*ix*) वात के गुणों में वर्णित दारुण का अर्थ .... होता है।

(*x*) पित्त दोष सूर्य के समान तथा कफ दोष .... के समान माना गया है।

3. सत्य/असत्य बताइये : 5×1=5

(*i*) प्रत्यक्ष प्रमाण त्रिकालिक होता है।

(*ii*) दोष बहुत अधिक प्रकुपित हों तो संशोधन चिकित्सा करनी चाहिए।

(*iii*) मधुर रस वातशामक होता है।

(iv) शुक्र सप्त धातुओं में अन्तिम धातु है।

(v) शिवा आमलकी का एक पर्याय है।

4. अति लघूत्तरीय प्रश्न (शब्द-सीमा 30 शब्द) (कोई **दस** प्रश्न कीजिए) : 10×3=30

(i) त्रिदोष का नाम लिखिये।

(ii) जांगल देश से आप क्या समझते हैं ?

(iii) युक्तिहत बल से आप क्या समझते हैं ?

(iv) आप्तोपदेश से आप क्या समझते हैं ?

(v) स्थान संश्रय अवस्था का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

(vi) चिकित्सा की परिभाषा लिखिये।

(vii) दैवव्यापश्रय चिकित्सा से आप क्या समझते हैं ?

(viii) **छः** रसों के नाम लिखिये।

(ix) वातकलाकलीय अध्याय के अनुसार वात के प्रमुख 6 गुण लिखिये।

(x) प्राण एषणा से आप क्या समझते हैं ?

(xi) परिग्रह राशि से आप क्या समझते हैं ?

(xii) हिताहार का महत्व संक्षेप में समझाइये।

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (शब्द-सीमा 50 शब्द) : 6×5=30

(i) चिकित्सा के चतुष्पाद समझाइये।

(ii) आहार उपयोग के कोई **पाँच** नियम लिखिये।

(*iii*) त्रिविध औषध को विस्तार से समझाइये।

(*iv*) युक्ति प्रमाण व इसका महत्व लिखिये।

(*v*) राजयक्ष्मा के षट्रूप लक्षण समझाइये।

(*vi*) वान प्रकोप के कारण तथा शमन के उपाय समझाइये।

6. कोई **एक** निबन्धात्मक प्रश्न हल कीजिए (शब्द-सीमा **150** शब्द) : 15

आहार विधि विशेष आपतन पर निबंध लिखिये।

अथवा

क्रियाकाल को विस्तार से समझाइये।